ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष 46 | अंक 20 | पृष्ठ 08 | दयानन्दाब्द 200 | एक प्रति ₹ 5 | वार्षिक शुल्क ₹250 | सोमवार, 10 अप्रैल, 2023 से रविवार 16 अप्रैल, 2023 | विक्रमी सम्वत् 2080 | सृष्टि सम्वत् 1960853123 |
दूरभाष/ 23360150 | ई-मेल/ aryasabha@yahoo.com | इन्टरनेट पर पढ़े/ www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के आयोजनों की श्रृंखला में दिल्ली में वेद प्रचार कार्यक्रमों की चली लहर, लगातार 4 मास तक सार्वजनिक स्थलों, पार्क, चौक, चौराहों पर होगा वेद प्रचार

यज्ञ, भजन एवं प्रवचनों के माध्यम से वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों से जुड़ रहे हैं– प्रतिदिन सैकड़ों लोग

युवा पीढ़ी को नशामुक्त बनाओ, यौवन बचाओ, रिश्ते बचाओ, गले लगाओ, मोटा अन्न प्रयोग में लाओ, पर्यावरण को शुद्ध बनाओ, महिला सशक्तिकरण और आर्य समाज के सेवा कार्यों को आगे बढ़ाने एवं महर्षि की शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने का अभियान सफलता पूर्वक बढ़ रहा है आगे

दिल्ली में वेद प्रचार रथ यात्रा के अन्तर्गत आर्य समाज मल्का गंज, मोर सरांय एवं डी.सी.एम. कालोनी में यज्ञ, भजन तथा प्रवचनों का कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए पं. नरेश दत्त जी, पं. नरेन्द्र दत्त जी, श्री सत्यप्रिय शास्त्री जी और दिल्ली सभा के प्रचारक संवर्धकों सहित हर आयु वर्ग के श्रोतागण

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के दो वर्षीय आयोजनों की श्रृंखला में आर्य समाज के 148वें स्थापना दिवस की पूर्व संध्या पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य केंद्रीय सभा दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में ताल कटोरा इनडोर स्टेडियम के प्रांगण में 21 अप्रैल, 2023 को आयोजित भव्य कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय श्री अमित शाह जी, केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री ने अपने विशेष उद्बोधन में कहा था कि महर्षि दयानंद सरस्वती जी द्वारा स्थापित आर्य समाज की आवश्यकता जितनी उस समय में थी उतनी ही उपयोगिता और प्रासंगिकता आज दिखाई दे रही है। आर्य समाज के कार्यों को तीव्र गति प्रदान करने का ये स्वर्णिम अवसर है। इसी भावना और कामना को साकार करते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य केंद्रीय सभा और दिल्ली के समस्त वेद प्रचार मंडलों के सहयोग से दिल्ली एन.सी.आर. की सभी सेवा बस्तियों में आर्य समाज के प्रचार-प्रसार और विस्तार के लिए जनजागरण अभियान का शुभारंभ 2 अप्रैल, 2023 को आर्य समाज मल्का गंज के प्रांगण से प्रारंभ

- शेष पृष्ठ 5 पर

आर्य समाज गया, बिहार द्वारा वैदिक धर्म महोत्सव समारोह संपन्न

महर्षि दयानंद की शिक्षाओं को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प लें– आर्यजन –विनय आर्य

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती पर आर्य समाज गया, बिहार द्वारा चार दिवसीय वैदिक धर्म महोत्सव धूमधाम से संपन्न हुआ। इस अवसर पर 4 दिनों तक प्रतिदिन यज्ञ, भजन, और प्रवचनों के आयोजन हुए और अंतिम दिन 51 कुंडीय यज्ञ का भव्य आयोजन किया गया। समापन समारोह में सिक्किम के पूर्व राज्यपाल बाबू गंगा प्रसाद जी द्वारा ध्वजारोहण किया गया और उत्तर प्रदेश के भजन

उपदेशक अजय आर्य जी द्वारा भजन प्रस्तुत किए गए। मध्य प्रदेश होशंगाबाद से पधारे आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी द्वारा यज्ञ एवं प्रवचनों का कार्यक्रम किया गया और श्री उमेश चंद्र कुलश्रेष्ठ द्वारा वैदिक विषयों पर प्रकाश डालते हुए ईश्वर के व्यापकता कर्मफल सिद्धांत देवी-देवताओं रामकृष्ण जैसे कठिन

- शेष पृष्ठ 8 पर

वेदवाणी-संस्कृत

तेरे भरोसे!

वेद-स्वाध्याय

त्वे असुर्यं वसवो न्यृण्वन् क्रतुं हि ते मित्रमहो जुषन्त ।
त्वं दस्यूँरोकसो अग्न आज उरु ज्योतिर्जनयन्नार्याय ॥
-ऋक्. 7 । 5 । 6

शब्दार्थ- वसवः=वसु **त्वे**=तुझसे (आश्रित हो) **असुर्यम्**=प्राणवत्व को, सामर्थ्य को **नि ऋण्वन्**=प्राप्त कर रहे हैं, **हि**=क्योंकि वे **ते**=तेरे **क्रतुम्**=कर्म का **मित्रमहः**=हे मित्र तेजवाले! **जुषन्त**=सेवन करते हैं। **अग्ने**=हे अग्ने! **त्वम्**=तू **आर्याय**=आर्यों, श्रेष्ठों के लिए **उरु**=विस्तृत **ज्योतिः**=ज्योति को **जनयन्**=प्रकाशित करता हुआ **दस्यून्**=दस्युओं, दूसरों का उपक्षय करने वालों को **ओकसः**=घर से **आजः**=खदेड़ देता है, निकाल देता है।

विनय- हे अग्ने! तुझमें आश्रय लेकर ये पृथिव्यादि वसु अपने असुर्य को, प्राणवत्व को, सामर्थ्य को प्राप्त कर रहे हैं, तुझमें ही आश्रय पाकर वसु ब्रह्मचारी लोग भी अपने प्राणवत्व और प्रज्ञावत्व (बल और ज्ञान) को प्राप्त कर रहे हैं। ये वसु इस सामर्थ्य को इसलिए पा रहे हैं, बल्कि तेरे आश्रय को भी इसलिए पा रहे हैं, चूँकि ये तेरे 'क्रतु' का सेवन करते हैं। इस संसार में जो तेरा महान् कर्म चल रहा है उसका ये सेवन करते हैं, उसके अनुकूल आचरण करते हैं। तेरे महान् संकल्प व ज्ञान के अनुसार ये अपना व्यवहार, कर्म करते हैं, विनष्ट हो जाते हैं। हे अग्ने! तुम तो 'मित्रमहः' हो। तुम्हारा तेज मित्र है, स्नेह करने वाला है। जो लोग तुम्हारे इस मित्र तेज से मैत्री करते हैं वे संसार में 'आर्य' कहलाते हैं, पर जो इस स्नेह करने वाले तेजे तेज से द्वेष करते हैं, जिन्हें यह तेरा तेज अच्छा नहीं लगता, वे ही 'दस्यु' नाम से पुकारे जाते हैं, क्योंकि, इस तेज से मैत्री करने वाले ही तेरे इस तेज को, प्रकाश को प्राप्त कर सकते हैं, अतः वे ही तेरा प्रकाश पाकर श्रेष्ठाचरण वाले अर्थात् आर्य बनते हैं। अपने स्वार्थमय क्षुद्र प्रकाश में मस्त रहने वालों, दूसरे 'दस्यु' लोगों को तेरी विस्तृत ज्योति प्राप्त नहीं होती। दस्यु अर्थात् दूसरों का उपक्षय करने वाले वे इसलिए बनते हैं, क्योंकि वे स्वार्थान्धा होते हैं, क्योंकि वे प्रकाश से प्रेम न रखने के कारण तेरी विस्तृत ज्योति को न पाकर अपने में अन्धे होते हैं, अतएव जब तू अपने किसी घर में, किसी लोक में विस्तृत ज्योति को प्रकाशित कर देता है तो वहाँ ये अन्धकारप्रिय दस्यु नहीं ठहर सकते, वहाँ से ये निकल जाते हैं। इस प्रकार, हे मित्रमहः! तू आर्यों के लिए महान् ज्योति देता हुआ दस्युओं को निकाल रहा है, इस प्रकार तेरे क्रतु का सेवन करने वालों को अपना सहारा देता हुआ, ऐसा न करने वालों को इस परम अवलम्बन से वंचित रख रहा है और इस प्रकार तू तेरा सहारा लेने वालों को प्राण व बल देता हुआ दूसरों को विनष्ट कर रहा है।

-:साभार:- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

संपादकीय

एनसीईआरटी द्वारा पाठ्यक्रम में किए गए बदलाव की समीक्षा

परिवर्तन अगर अच्छा हो तो सहर्ष करें स्वीकार

"एनसीईआरटी द्वारा पाठ्यक्रम में किए गए बदलाव को लेकर ऐसा कहा जा रहा है कि प्राचीन से लेकर आधुनिक काल के भारतीय इतिहास की महान विभूतियों को पर्याप्त स्थान न देने के लिए देश के राष्ट्रीय नायकों के बारे में केवल विकृत तथ्यों और इस्लामी सुल्तानों की तथ्यहीन प्रशंसाओं को ही जगह दी गई थी। जिसे एनसीईआरटी द्वारा हटाया गया है। लेकिन एनसीईआरटी का दावा है कि उसने शिक्षा की गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए बदलाव किए हैं और यह बदलाव नए और आधुनिक समय की जरूरत को ध्यान में रखकर किए गए हैं। इस महत्वपूर्ण विषय पर हमारा मानना है कि परिवर्तन प्रकृति का अटल नियम है। अगर परिवर्तन सृजन के लिए हो, मानव कल्याण के लिए हो, देश-धर्म, संस्कृति और सभ्यता के उत्थान के लिए हो, अपने गौरवशाली इतिहास की मजबूती के लिए हो, तो उसे सहर्ष स्वीकार करना उचित है। एनसीईआरटी द्वारा पाठ्यक्रम में बदलाव अगर भारत के भविष्य और विश्व की आशा विद्यार्थियों के निर्माण में साधक है तो यह बदलाव अच्छा है।"

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) की स्थापना एक स्वायत्त संस्था के तौर पर 1961 में हुई थी। भारत में स्कूली शिक्षा के गुणात्मक सुधार में सहायता करने के लिए मुख्य रूप से यह संस्था गतिशील है। राष्ट्र-निर्माण और देश भर में नैरेटिव और विचारों को स्थापित करने में भी इस संस्था की अहम भूमिका मानी जाती है। पिछले कुछ सालों में एनसीईआरटी ने अपने सिलेबस की विषय-वस्तु और सिद्धांतों में कई बदलाव किए हैं, हालांकि इतिहास से कुछ अध्यायों को हटाने के लिए कई बार इसकी आलोचना भी हुई है। साल 1961 में इसके गठन के बाद से एनसीईआरटी द्वारा 2005 में सिलेबस में बड़े बदलाव हुए और राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा (2005) पेश की गई. इसके तहत कांग्रेस सरकार ने पिछली बीजेपी सरकार द्वारा किए गए बदलावों को पूर्ववत करने की कोशिश की, 2017 में एनसीईआरटी ने 182 पाठ्यपुस्तकों और टॉपिक्स को अपडेट किया, स्वच्छ भारत, डिजिटल इंडिया, जीएसटी, 'बेटी बचाओ, बेटी पढाओ', नोटबंदी जैसे कई टॉपिक्स को किताबों में जोड़ा गया ताकि छात्रों को इन मुद्दों की स्पष्ट जानकारी मिल सके, इसके अलावा भारतीय संस्कृति पर फोकस को ध्यान में रखते हुए भारत की परंपराओं और प्रथाओं के ज्ञान, शिवाजी महाराज, सुभाष चंद्र बोस, महाराणा प्रताप, स्वामी विवेकानंद आदि को इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में जोड़ा गया था।

गौरतलब है कि एनसीईआरटी ने न केवल पाठ्यपुस्तकों को नया रूप दिया है, बल्कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 की तर्ज पर नेशनल सिलेबस की रूपरेखा को भी 18 साल बाद पुनः संशोधित किया है। इससे पहले चार बार 1975, 1988, 2000 और 2005 में राष्ट्रीय पाठ्यक्रम

की रूपरेखा में संशोधन करके लागू किया है।

सरकार का कहना है कि छात्रों पर पढ़ाई के बोझ को कम करने के अलावा दोहराव और ओवरलैपिंग टॉपिक्स को हटाने के लिए बदलाव किए गए हैं, हालांकि, आलोचकों का दावा है कि प्रमुख रूप से सामाजिक विज्ञान और इतिहास की किताबों में की गई कटौती राजनीति से प्रेरित है। शिक्षा के माध्यम से देश को एकता के सूत्र से जोड़ने के उद्देश्य से एक समिति का गठन कर उसे एनसीईआरटी सिलेबस में संशोधन का दायित्व सौंपा गया, इस समिति के चुने गए सदस्यों में से एक प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ एस एल भैरप्पा के अनुसार, 'कांग्रेस सरकार के दौरान मुगल आक्रमणकारियों को पाठ्यक्रम में महिमामंडित किया गया और छात्रों को वास्तविक इतिहास से वंचित रखा गया। जब डॉ. भैरप्पा ने सही इतिहास प्रस्तुत करने पर जोर दिया तो उन्हें कमेटी से बाहर कर दिया गया था, इस बीच, जैसे ही बदलावों की घोषणा की गई तो कई लोगों ने इस मुद्दे पर अपना समर्थन और नाराजगी व्यक्त करने के लिए ट्विटर का सहारा लिया, कुछ लोगों ने मुगल इतिहास को हटाए जाने के कदम को सही ठहराते हुए कहा कि मुगल-पठान भारतीय नहीं थे और विदेशी अत्याचारी-डाकुओं को इतिहास की किताबों में हीरो बनाकर युवा पीढ़ी का ब्रेनवॉश किया गया है, सिलेबस में हुए फेरबदल पर अपनी असहमति साझा करते हुए समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव ने इन बदलावों पर आपत्ति जताते हुए ट्विटर का सहारा लिया, समाजवादी पार्टी के विधायक इकबाल महमूद ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मुगलों का इतिहास पूरी दुनिया में है और सरकार गिराए जाने से उनका विनाश नहीं होगा, सपा के एक और नेता अबू आसिम आजमी ने ट्वीट कर कहा, 1857 की बगावत का नेतृत्व करने वाले बहादुर शाह जफर का नाम कैसे मिटाएंगे?

शिक्षण और सीखने के वातावरण का भरोसेमंद इंडिकेटर सिलेबस की गुणवत्ता को माना जाता है। जिसका पालन देश भर के छात्र करते हैं, इसलिए उच्च गुणवत्ता वाले सिलेबस तैयार करने का प्रयास किया ही जाना चाहिए। क्योंकि यह छात्रों को शिक्षण के अलग-अलग महत्वपूर्ण पहलुओं से परिचित कराता है जो कि उन्हें भविष्य में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है और काम आता है।

एनसीईआरटी द्वारा पाठ्यक्रम में किए गए बदलाव को लेकर ऐसा कहा जा रहा है कि प्राचीन से लेकर आधुनिक काल के भारतीय इतिहास की महान विभूतियों को पर्याप्त स्थान न देने के लिए देश के राष्ट्रीय नायकों के बारे में केवल विकृत तथ्यों

- शेष पृष्ठ 7 पर

स्वास्थ्य संदेश

आरोग्यता का खजाना– तुलसी का पौधा

“आर्युवैदिक औषधियों में तुलसी एक अत्यंत उपयोगी वनस्पति है। तुलसी का पौधा लगभग सभी घरों में आसानी से पाया जाता है। हालांकि कुछ लोग इस महत्वर्पू औषधि का प्रयोग न करके केवल इसकी पूजा में ही लगे रहते हैं, जबकि तुलसी एक ऐसी औषधि है जो एक नहीं कई बीमारियों में उपयोग की जाने वाली अचूक औषधि है- जैसे हिचकी, खांसी, पित्तदोष, श्वास, वात-पित्त-कपफ को संतुलित करने में आदि, तुलसी से मुंह की दुर्गन्ध भी नष्ट होती है। आर्य संदेश के इस अंक में प्रस्तुत है तुलसी के गुण एवं प्रयोग। यहां प्रस्तुत हैं तुलसी के लाभ”

1. प्रदूषित वायु के शुद्धिकरण में तुलसी का विलक्षण योगदान है। यदि तुलसी वन के साथ प्राकृतिक चिकित्सा की कुछ पद्धतियां जोड़ दी जाएं तो प्राणघात और दु:साध्य रोगों को भी निर्मूल करने में सफलता मिल सकती है।
2. तुलसी शारीरिक व्याधियों को दूर करती ही है, साथ ही मनुष्य के आन्तरिक भावों और विचारों पर भी कल्याणकारी प्रभाव डालती है। तुलसी के पोधो में मच्छरों को दूर भगाने का गुण है और इसकी पत्तियां खाने से मलेरिया के दूषित तत्वों का मूलत: नाश होता है। तुलसी और काली मिर्च का काढ़ा बनाकर पीने के सरल प्रयोग से ज्वर दूर किया जा सकता है।
3. निसर्गोपचारकों का कहना है कि तुलसी की पत्तियों को दही या छाछ के साथ सेवन करने से वजन कम होता है, शरीर की चरबी कम होती है, अत: शरीर सुडौल बनता है। साथ ही थकान मिटती है। दिनभर स्फूर्ति बनी रहती है और रक्तकणों में वृद्धि होती है।
4. ब्लडप्रेशर के नियमन, पाचनतन्त्र के नियमन तथा रक्तकणों की वृद्धि के अतिरिक्त मानसिक रोगों में भी तुलसी के प्रयोग से असाधारण सफल परिणाम प्राप्त हुए हैं।
5. अथर्ववेद में आता है, यदि त्वचा, मांस तथा अस्थि में महारोग प्रविष्ट हो गया हो तो उसे श्यामा तुलसी नष्ट कर देती है। तुलसी के दो भेद होते हैं- 1. हरे पत्ते वाली और 2. श्याम (काले) पत्तेवाली। श्यामा तुलसी सौन्दर्यवर्धक है। इसके सेवन से त्वचा के सभी रोग नष्ट हो जाते हैं और त्वचा पुन: मूल स्वरूप धारण कर लेती है। तुलसी त्वचा के लिए अद्भुत रूप से गुणकारी है।
6. तुलसी हिचकी, खांसी, पित्तदोष, श्वास और पार्श्व-शूलको तथा वात, कफ और मुंह की दुर्गन्ध को नष्ट करती है।

   स्कन्दपुराण एवं पद्मपुराण के उत्तर खण्ड में आता है कि जिस घर में तुलसी का पौधा होता है, वह घर तीर्थ के समान है। वहां व्याधिरूप यमदूत प्रवेश ही नहीं कर सकते।
7. तुलसी किडनी की कार्यशक्ति में वृद्धि करती है। तुलसी के रस में शहद मिलाकर देने से एक केस में किडनी की पथरी छ: माह के निरन्तर उपचार से बाहर निकल गई थी।
8. इण्ट्राटेकिप्पल कैंसर से पीड़ित एक रोगी पर ऑपरेशन तथा अन्य अनेक उपचार करने के बाद अन्त

- शेष पृष्ठ 7 पर

बाल बोध

अनुशासन से मिलती है सफलता

“अगर विद्यार्थी परिश्रमी है और पुरुषार्थी है तो उसकी बुद्धि सदैव प्रखर रहती है। वैसे दिमाग किसी का मोटा-पतला नहीं होता, पर कुछ बनने की और आगे बढ़ने की लगन मन में होनी चाहिए, लगन से व्यक्ति गगन तक पहुंच जाता है। कालीदास पेड़ की उस डाली को काट रहा था जिस पर स्वयं बैठा था। किसी राहगीर ने कहा क्या कर रहे हो? नीचे गिर जाओगे। जब कालीदास ने यह नहीं सोचा तो वही हुआ, डाली कटी और व धड़ाम से जमीन पर गिरा। वही कालीदास अपनी पत्नी विद्योत्मा की प्रेरणा और अपने अथक परिश्रम से आज महाकवियों की श्रेणी में स्मरण किया जाता है। उन्होंने संस्कृत में ‘अभिज्ञान शाकुंतलम’ जैसे काव्यों की रचना की, जो आज भी प्रसिद्ध है।”

अनुशासन से विद्यार्थी जीवन में सफलता प्राप्त करता है। अपने जीवन में व्यवस्थित दिनचर्या को अपनाओ। किस समय क्या कार्य करना है, यह सब पहले से ही निश्चित होना चाहिए। प्रात: काल किस समय जागना है, कब व्यायाम करना है और स्नान करना है। पाठशाला किस समय जाना है, इसका ध्यान भी स्वयं होना चाहिए और स्कूल में भी अनुशासित रहकर अध्ययन करना जरूरी है। सायंकाल किस समय खेलना है, किस वक्त गृहकार्य करना है और किस समय शयन करना है, इन सब कार्यों का समय निर्धारित होना चाहिए। फौज में अफसर का हुक्म चलता है लेकिन आप स्वयं पर हुक्म चलाने वाले बनिए।

दुनिया में जितने भी महापुरुष हुए हैं, उन्होंने स्वयं को महान बनाने के लिए समय का सदुपयोग किया। दूसरी तरफ जो समय को बरबाद करता है, उसे समय बरबाद कर देता है। जो अपने जीवन में व्यवस्थित दिनचर्या और अनुशासन को अपनाता है उसका समय व्यर्थ व्यय नहीं होता। आलस्य और लापरवाही के कारण विद्यार्थी अपने कार्य को कल-परसों पर टाल देता है। ऐसा विचार करता है कि कल करेंगे, अभी कर लेंगे, पहले थोड़ा विश्राम कर लेता हूं। इस तरह आलस्य करने से विद्यार्थी अवसर चूक जाता है। और अवसर चूका हुआ किसान और डाल से चूका हुआ वानर धड़ाम से नीचे गिरता है। इसलिए अनुशासित होकर, सजग होकर विद्यार्थी को अपनी प्रतिभा का निरन्तर विकास करना चाहिए।

मनुष्य आजीवन विद्यार्थी रहता है। विनोबा भावे वृद्ध अवस्था तक अनुशासन में रहकर विद्या अर्जित करते रहे। उन्होंने अपने जीवन में चौदह भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया। अपने हाथ में सलेट लेकर आलस्य रहित होकर निरन्तर कुछ-न-कुछ सीखने का प्रयास करते रहते थे। किसी व्यक्ति ने उनसे पूछा इस अवस्था में अनेक भाषाएं सीखकर आप क्या सिद्ध करना चाहते हैं? उन्होंने मुस्कराते हुए कहा हमें भगवान् ने अनमोल बुद्धि दी है, अगर हम इसे किसी कार्य में न लगाएं तो यह व्यर्थ के कार्यों में संलिप्त हो जाएगी। कुछ लोग अन्तिम समय तक गलत बातें सीखते रहते हैं, तो हम अच्छी बातें क्यों न सीखें। कुछ सीखने के लिए प्रयासरत रहने वाले व्यक्ति का दिमाग नया रहता है। वह अच्छी और ऊंची कल्पनाएं करता है। और वह ऊंचा स्थान भी प्राप्त कर लेता है।

अगर विद्यार्थी परिश्रमी है और पुरुषार्थी है तो उसकी बुद्धि सदैव प्रखर रहती है। वैसे दिमाग किसी का मोटा-पतला नहीं होता, पर कुछ बनने की और आगे बढ़ने की लगन मन में होनी चाहिए लगन से व्यक्ति गगन तक पहुंच जाता है। कालीदास पेड़ की उस डाली को काट रहा था जिस पर स्वयं बैठा था। किसी राहगीर ने कहा क्या कर रहे हो? नीचे गिर जाओगे। जब कालीदास ने यह नहीं सोचा तो वही हुआ, डाली कटी और व धड़ाम से जमीन पर गिरा। वही कालीदास अपनी पत्नी विद्योत्मा की प्रेरणा और अपने अथक परिश्रम से आज महाकवियों की श्रेणी में स्मरण किया जाता है। उन्होंने संस्कृत में ‘अभिज्ञान शाकुंतलम’ जैसे काव्यों की रचना की, जो आज भी प्रसिद्ध हैं।

व्याकरण के जनक पाणिनि को उनके गुरु ने अयोग्य समझकर कक्षा से निष्कासित कर दिया था। वह दु:खी मन से इधर-उधर भ्रमण कर रहे थे। उनको प्यास लगी तो वह कुएं के पास गए, जहां महिलाएं पानी भर रही थीं। जब उसने वहां पानी पीकर प्यास बुझाई तब उसको वहां एक अद्भुत दृश्य दृष्टिगत हुआ। पाणिनि अपनी जिज्ञासा प्रकट करते हुए महिलाओं से प्रश्न करते हैं कि इस कठोर लकड़ी की मुंडेर पर और ठोस पत्थर की शिला पर गहरे निशान (गड्ढ़े) कैसे पड़े। महिलाओं ने उपहास करते हुए कहा हे नादान मुसाफिर। कोमल रस्सी के अनेक बार आवागमन की रगड़ से मुंडेर पर निशान पड़ ही जाता है और फिर मिट्टी के घड़े को बार-बार पत्थर की शिला पर रखने से ठोस पत्थर में भी घड़े को रखने का स्थान बन ही जाता है। अर्थात् गड्ढ़ा हो ही जाता है, इसमें आश्चर्य की क्या बात है।

पाणिनि का भ्रमित मन शांत हो गया। उसके मन में विचार आया कि जब कोमल धागों की रस्सी से कठोर लकड़ी भी घिस जाती है, उस पर निशान पड़ जाता है और मिट्टी के कणों से बना हुआ घड़ा मार्गों में अवरोध पैदा करने वाले पत्थर में भी अपना स्थान (गड्ढ़ा) बना सकता है, तो मैं विद्या क्यों नहीं प्राप्त कर सकता। इन जड़ वस्तुओं से प्रेरणा लेकर पाणिनि ने कठोर परिश्रम और पुरुषार्थ किया। जिसके फलस्वरूप उन्होंने संसार की अष्टाध्यायी जैसा व्याकरण का महान ग्रन्थ प्रदान किया। जो आज भी हमारा मार्गदर्शन करके उनके परोपकार की सुगंध फैला रहा है। इस प्रसंग के अनुरूप कवि का सुन्दर कथन है-

करत-करत अभ्यास के,
जड़ मति होत सुजान।
रस्सी आवज-जात ते,
सिल पर परत निशान।।

- शेष पृष्ठ 6 पर

मानव सेवा के क्षेत्र में आर्य समाज के बढ़ते कदम

दिल्ली की सेवा बस्तियों स्वास्थ्य जागरूकता सेवा अभियान से लाभ प्राप्त कर रहे हैं– प्रतिदिन रोगीजन

झुग्गी–झोपड़ियों में जा जाकर की जा रही है, निर्धन रोगियों की निःशुल्क स्वास्थ्य जांच

दिल्ली की समस्त आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं की नियंत्रक शिरोमणि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा राष्ट्र सेवा एवं मानव निर्माण के सैकड़ों प्रकल्प गतिशील हैं। सभा द्वारा संचालित सेवा समर्पण के इस अनुक्रम में नील फाउंडेशन के सहयोग से चल रहे स्वास्थ्य जागरूकता सेवा से प्रतिदिन सैकड़ों गरीब लोग लाभ प्राप्त कर रहे हैं। इस महत्वपूर्ण योजना का उद्देश्य है कि दिल्ली की उन समस्त सेवा बस्तियों में जहां निर्धन, मजदूर लोग रहते हैं, जहां पर छोटे छोटे झुग्गी झोपड़ी हैं, साफ सफाई भी नाम मात्र के लिए ही है, राजनीतिक पार्टियां जहां केवल चुनाव के समय पर वोट मांगने के लिए ही जाती हैं, बाकी समय उन भोले भाले लोगों को यदा कदा भीड़ के रूप में ही वे प्रयोग करते हैं, उनके सुख, दु:ख, पीड़ा, संताप से उनका कोई सरोकार नहीं होता। ऐसे गरीब दिहाड़ी मजदूर लोगों के कल्याण के लिए आर्य समाज आगे आया है। लगभग प्रतिदिन सभा की एंबुलेंस और पूरी स्वास्थ्य जागरूकता सेवा की टीम दिल्ली में जगह जगह पर झुग्गी बस्तियों में नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच करती है, जिसमें सुगर, बी.पी., हीमोग्लोबिन, आक्सीजन, पल्स, वजन, लम्बाई की जांच कर तुरंत रिपोर्ट दी जाती है। यह सेवा कार्य पिछले कई महीनों से लगातार चल रहा है और प्रतिदिन झुग्गी बस्तियों में स्वास्थ्य परीक्षण किया जा रहा है।

वस्तुत: आधुनिक परिवेश में उत्तम स्वास्थ्य अपने आप में एक बड़ी चुनौती है। उस पर भी भारत की राजधानी दिल्ली का प्रदूषित वातावरण, झुग्गी–झोपड़ी में रहने वाले निर्धन मजदूरों जो रोज कमाते और खाते हैं, जहां हवा, पानी, भोजन आदि सब बहुत कम स्वच्छ होता है। ऐसे में वहां पर बीमार लोग अपनी दिहाड़ी मजदूरी से छुट्टी न मिलने के कारण बिना स्वास्थ्य परीक्षण के लक्षणों के आधार पर दवाई खाकर ज्यादा बीमार हो जाते हैं। इन सभी समस्याओं और पीड़ाओं को ध्यान में रखते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दिल्ली की समस्त सेवा बस्तियों में स्वास्थ्य जागरूकता सेवा अभिमान के माध्यम से सभा की एम्बुलेंस और स्वास्थ्य जागरूकता की पूरी टीम जगह जगह स्वास्थ्य परीक्षण का कार्य कर रही है। जिससे निर्धन रोगियों की बीमारी की सही जांच और उपचार संभव हो सके। इस सेवा कार्य में सभा को लगातार सफलता प्राप्त हो रही है।

आर्य समाज द्वारा संचालित स्वास्थ्य जागरूकता अभियान के अन्तर्गत विभिन्न सेवा बस्तियों में स्वास्थ्य जांच करते हुए चिकित्सकों की टीम और जांच कराते हुए हर आयु वर्ग के रोगी।

बांग्लादेश में वेद प्रचार कार्यक्रम संपन्न

बंग्लादेश की धरा पर वैदिक धर्म का प्रचार करते हुए आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी एवं श्रोतागण, इस अवसर पर वहां भारतीय राजदूत श्री प्रणय वर्मा जी को वैदिक साहित्य भी भेंट किया गया।

आर्य समाज के युवा विद्वान आचार्य आनंद पुरुषार्थी जी द्वारा बांग्लादेश में 20 फरवरी से लेकर 4 मार्च तक 15 दिवसीय वेद प्रचार कार्यक्रम उत्साह पूर्वक संपन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य समाज के संगठन अग्निवीर के सैकड़ों डॉक्टर्स, इंजीनियर सक्रिय रूप से संलग्न रहे और ढाका सहित विभिन्न स्थानों पर वेद प्रचार कार्यक्रमों का सफल आयोजन संपन्न हुआ। आचार्य श्री आनंद पुरुषार्थी जी ने वेदों के गूढ़ रहस्यों को सरल, सहज भाषा में प्रस्तुत किया तथा आर्य समाज के सेवा कार्यों की जानकारी दी और मानव कल्याण और राष्ट्र निर्माण में आर्य समाज की अहम भूमिका को जन–जन को बताया। आचार्य जी का यह प्रचार कार्यक्रम बांग्लादेश में ऐतिहासिक रूप से सफल हुआ। आपने ढाकेश्वरी मंदिर, रमना काली मंदिर, समुद्री तट मंदिर, इस्कॉन के बहुत सारे मंदिर, म्यूजियम आदि पर्यटन एवं दर्शनीय स्थलों का भ्रमण भी किया। 2 मार्च, 2023 को भारत के महामहिम राजदूत श्री प्रणय वर्मा जी के ढाका स्थित कार्यालय में एक शिष्टमंडल के साथ जाकर भेंट की और उन्हें अंग्रेजी, हिंदी, बंगला भाषा का आर्य वैदिक साहित्य भेंट किया। आर्य समाज के अग्निवीर संगठन बांग्लादेश के बारे में जानकारी भी दी और स्थानीय लोगों के प्रति सहयोग पूर्ण स्नेह बनाए रखने का आग्रह किया। आचार्य आनंद पुरुषार्थी जी अपनी प्रचार यात्रा पूर्ण करके 5 मार्च को स्वदेश लौट आए।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती पर डाक टिकट जारी : संपूर्ण आर्य जगत को बधाई

7 अप्रैल, 2023 को विज्ञान भवन में महर्षि दयानन्द का डाक टिकट जारी करते हुए उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनकड जी, श्रीमती धनकड जी, स्वामी रामदेव जी, डॉ. सत्यपाल सिंह जी एवं अन्य महानुभाव

भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के तत्वावधान में, विज्ञान भवन नई दिल्ली में, 7 अप्रैल 2023 को आयोजित भव्य कार्यक्रम में संचार मंत्रालय, भारत सरकार के माध्यम से भारत के महामहिम उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनकड जी द्वारा महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती पर डाक टिकट जारी किया गया। जिसकी संपूर्ण आर्य जगत के आर्य नेताओं, अधिकारियों, कार्यकर्ताओं और सदस्यों को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा और आर्य संदेश परिवार की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं। इस कार्यक्रम की सफलता में सत्य फाउंडेशन का विशेष सहयोग रहा। **-संपादक**

पृष्ठ 1 का शेष

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के आयोजनों की श्रृंखला में

वेद प्रचार रथ यात्रा के अन्तर्गत आर्य समाज त्रिनगर के माध्यम से कन्हैया नगर मैट्रो स्टेशन, आर्य समाज संदेश विहार, सकूर पुर बस्ती, आर्य समाज मंगोलपुरी के माध्यम से ओ ब्लाक, एल ब्लाक, आर ब्लाक मंगोलपुरी में तीन दिनों तक संपन्न हुए वेद प्रचार के विहंगम दृश्य

हुआ और यह यात्रा दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में निरंतर आगे बढ़ रही है।

वैदिक प्रचार रथ यात्रा का कार्यक्रम 3 अप्रैल, 2023 को आर्य समाज दीवान हाल चाँदनी चौक द्वारा संचालित आर्य समाज मोर सराय में अत्यंत उत्साह पूर्वक संपन्न हुआ, 4 अप्रैल, 2023 को आर्य समाज डी.सी.एम. कॉलोनी में हर आयु वर्ग के लोगों ने यज्ञ, भजन और प्रवचनों से लाभ प्राप्त किया, 5 अप्रैल, 2023 को आर्य समाज त्रिनगर के सौजन्य से कन्हैया नगर मेट्रो स्टेशन के सामने सैकड़ों लोग वेद प्रचार अभियान से जुड़े, 6 अप्रैल, 2023 को आर्य समाज संदेश बिहार सुकूर पुर में वेद मंत्रों की, मधुर भजनों और वैदिक प्रवचनों से सारा वातावरण गुंजायमान हो उठा, 7 अप्रैल, को एल ब्लॉक मंगोलपुरी, 8 अप्रैल, को आर ब्लॉक मंगोलपुरी और 9 अप्रैल, 2023 को ओ ब्लाक आर्य समाज मंगोलपुरी में इन तीनों दिन लगातार मंगोलपुरी में वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों का प्रचार-प्रसार अपनी अपार सफलताओं के साथ संपन्न हुआ।

मानव समाज को जागरूक करना है लक्ष्य

आधुनिक परिवेश में मानव समाज आपा धापी मची हुई है। सब लगातार दौड़ लगा रहे हैं, कहां जाना है, क्या करना है, इसका ज्ञान कम ही लोगों के पास है। बस चलते जाना है, बिना लक्ष्य और उद्देश्य की अर्थहीन यात्रा को सुदिशा प्रदान के लिए आर्य समाज का वेद प्रचार रथ दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में, सार्वजनिक स्थानों पर, पार्क, चौंक, चौराहों पर प्रतिदिन पहुंच रहा है, आर्य समाज के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक पं श्री नरेश दत्त जी, उनके सुपुत्र श्री नरेन्द्र दत्त जी, उनके साथ तबला वादक श्री और आर्य समाज के संवर्धक, आर्य वीर दल के वीर वीरांगनाएं, क्षेत्रीय आर्य समाजों के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्यों सहित वेदप्रचार मंडलों के सम्मानित अधिकारीगण और सामान्य जनता इस जन जागरण अभियान में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। इस प्रचार अभियान के माध्यम से मानव समाज को बताया जा रहा है कि मानव जीवन अनमोल है, इसके लक्ष्य और उद्देश्य तक प्राप्त करने के लिए जागना जरूरी है, जागने का मतलब सुबह सोकर जागने से नहीं है बल्कि अपने अंदर जागने की बात है। हम कौन हैं, कहां से आए हैं, कहां जाना है, कहां जा रहे हैं, हमारी शक्ति और सामर्थ्य क्या है, हम क्या से क्या होते जा रहे हैं, हमें अपने जीवन को सफल बनाने के लिए क्या करना होगा? इन समस्त बिंदुओं पर आर्य समाज के उपदेशक सरल, सहज भाषा में भजनों और प्रवचनों के माध्यम प्रकाश डाल रहे हैं। जो कि साधारण लोगों को अति मनभावन लग रहा है।

युवाओं को नशामुक्त करके उनमें देशभक्ति जगाने का प्रयास

आज का युवा नशे के जाल में बुरी तरह फंसता जा रहा है। देश की युवा शक्ति को पतन के रास्ते से बचाकर सही दिशा में अग्रसर करने के लिए आर्य समाज कृत संकल्प है। वेद प्रचार रथ यात्रा से किए जाने वाले प्रचार-प्रसार का यह भी एक मुख्य विषय है, जो कि निरंतर विशेष अभियान के रूप में सफलता से चल रहा है। युवाओं को शुद्ध आहार, शुद्ध विचार, शुद्ध आचरण और व्यवहार का संदेश दिया जा रहा है। नशे से होने वाली हानियों के प्रति जगाया जा रहा है।

रिश्ते बचाइए और गले लगाइए के अभियानों को दी जा रही प्रमुखता

प्रत्येक व्यक्ति और परिवार देश की प्रमुख इकाई है। अतः हर व्यक्ति और परिवार का यह कर्तव्य बनता है कि वह आज के इस भयावह दौर में अपने भारत राष्ट्र को एकता और अखंडता के लिए समाप्त होते जा रहे भाई बहन, चाचा चाची, मौसा मौसी, बूवा फूफा, ताऊ ताई के महत्वपूर्ण रिश्तों के प्रति जागरूक होना ही चाहिए। आजकल संतान निर्माण में युवाओं की बढ़ती उदासीनता को दूर

- शेष पृष्ठ 7 पर

What the Vedas Stand for

Continuing the last issue

Vedic polity is also a very important contribution

towards the build up of the human society, which should be studied and given due importance to in the make up of the human civilisation and the proper understanding of economic, social and political development.

The Yajurved or the Veda of Action supplies valuable informations on the subject, which are worthwhile nothing here.

India (most powerful, abode of riches and power, and leader in peace and war), Deva (noble), Agni (fiery), Soma (pleasant), Vaiswanar (summation of all people and the leader of all men) and Samrat (emperor) are the lea Jing epithets of a Vedic king and bring out his leading roles. The Yajurved and Atharvaved are full of them.

The Yajurved (1. 13, 4.36, 7,24 has used two expressions Varuna and Varaniya, which make it clear that a Vedic or Aryan king or head of state is duly elected, and the word Atithi or (having no fixity or heredity), occurring therein confirm the same. His qualities, innate and acquired, which make him eligible for election or seletion, according to the Yajurved are Arati (giving of peace in all hearts), Agreni (all round leader), Rite Jat (well-versed in administration), Kavi (farsighted), Janaam Patra (protecting people), Indra (supreme and leader) and Agni (brilliant and leader).

Chapters 7, 8 and 9 of the Yajurved lay down that there should be a constitution of a country, binding all officials of state, including its king, who is specifically mentioned as bound by regulation (Upayam grihitosi). Yajurved, 7.24 and 7.36, make it specifically clear that king or head of state is also the chief excutive.

The first charge on head of State, according to Yajurved (1.16 and other texts) is protection of the people's life and property and dissemination of knowledge (basic), and the home afiairs ministry, states the same, should be the strongest: "Induh antah mahimanania-dhirah" (Yajurved, 8.3)). The Yajurved (5. 12, 1.16, 1.27, 7.39) preseribes dual function of head of state to reign and to rule, and it (7 .40 and 10.48) also advocates democracy and republic, the first is expressed by the word Jana Rajya, and the second by Gana Rajya. It's also provided that State should be nondoctrinaire and that the o—ence forecs must be nonaligned and should bear regional names : Yajurved, 1.31, 5.12.

Yajurved, 1.14, makes some imperical and startling observations about taxes and allied matters, which cannot be bypassed. They are : (i) iands don't vest in State, (2) lands vest in tillers, (3) tillers, though obliged to pay rates and taxes, don't hold lands subject to payment of the same, and (4) State is only enrtitled to Vanaspatya or land revenue. Then again 5.12 and 6.3 of the Yajurved emphasise that all interests and classes in state should be protected, and Yajurved, 6.3, further suggests by inevitable implication that ministers (Brahmans), administrators (Kshatriyas) and producers (Vaishyas) may be taxed ("Brahmavani twa kshatravani rayas-poshavani paryuhami"), and not the Shudras, wage earners or manual workers. Yajurved, 1. 21, 1.24 and 1.27, repeat the same.

State is run into three departments of Mitra (executive), Aryama (judiciary) and Varun (legislative)—Yajurved, 3.31-33. State is also held to be responsible for standard living conditions (housing, feeding and clothing)—Yajurved 6. 27-28. Public and private ownership, according to the Vedic politico economic set up, are not inconsistent—Yajurved, 40.1

Narrow groupism, brain-washing, indotrination, power or pressure tactics, etc., do not find place in the Vedic system of things, and it ushers in freedom of worship, speech and association within the framework of the Divine ordainments, persuations at all stages, dissemination of knowledge and informations, equality of man and man, nondiscrimination at all levels and sympathetic and just approach to things confronting mankind.

(13) Namaste the Universal Vedic Salutation

All the four Vedas in general and the Yajurved and the

Atharvaved in particular enjoin that when two persons meet or depart, they should wish each other and show respect by uttering the expression Namaste (I respect you) in a proper manner. Swami Dayanand, while commenting on Yajurved,

16.32, writes that Namaste should be uttered by persons of all grades and wish and respect one another both while meeting and departing.

To be continued in next issue

आर्योद्देश्यरत्नमाला पद्यानुवाद

ईश्वर-धर्म

1-ईश्वर

जिसके कर्म, स्वभाव, गुण,
सुखस्वरूप हैं सत्य ।
अद्वितीय, चेतनमहा,
सर्वशक्ति युत नित्य ।।1।।
आदि-अन्त से हीन जो
व्यापक है, सर्वत्र ।
निराकार, न्यायी सदा,
ज्ञानी, पूर्ण पवित्र ।।2।।
हे दयालु, आनन्दमय,
अविनाशी, अजरूप ।
पाप-पुण्य-फल दे रहा
जो भूपों का भूप ।।3।।
रचना, पालन, सृष्टि का
करता जो कि विनाश ।
उसको 'ईश्वर' जानिए
उस पर हो विश्वास ।।4।।

2-धर्म

ईश्वर-आज्ञापालना,
पक्षपात से हीन ।
परहित, न्यायविधान की,
बजे सदा ही बीन ।।5।।
प्रत्यक्षादि प्रमाण से
सुपरीक्षित, वेदोक्त ।
सभी मनुष्यों के लिए
वही 'धर्म' मान्योक्त ।।6।।

साभार :
सुकवि पण्डित ओंकार मिश्र जी द्वारा पद्यानुवादित पुस्तक से

प्रेरक प्रसंग

खड़े होकर व्याख्यान बैठकर उपदेश

पं. लेखराम का कुर्त्ता व उनका जीवन

हैदराबाद राज्य में ताड़ी का सत्याग्रह चलाने का निश्चय किया गया। कई प्रमुख नेता कहीं एतद्विषयक एक सभा के लिए गये। सरकार ने धारा 144 लगा दी। ''एक कांग्रेसी नेता ने कहा। आर्यनेता पण्डित श्री विनायकरावजी व पण्डित नरेन्द्रजी ने कहा इसका उपाय हम बताएँगे। क्या उपाय होगा?'' एक ने पूछा।

पण्डित नरेन्द्रजी ने कहा कि हम आर्यसमाजी उपाय बताएँगे। सभा अवश्य होगी। खड़े होकर तो व्याख्यान होता है। बैठकर उपदेश दिया जाता है। सरकार ने व्याख्यान से रोका है उपदेश से तो नहीं रोका। अब बैठकर हम वेद-मन्त्र का उपदेश देंगे। जो कहना है सो कहेंगे। बुराई का विरोध करो। भलाई की रक्षा करो। सभा हुई उपदेश के नाम पर सब कार्य हो गया। पण्डितजी ने यह घटना मुझे स्वयं सुनाई।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी पं. लेखराम जी के जीवन की निम्न घटना बहुत भावविभोर होकर सुनाया करते थे।

एक बार वीरवर लेखराम जालन्धर में लाला मुंशीरामजी (स्वा. श्रद्धानन्दजी) के पास आये। आर्यपथिक को कहीं आगे प्रचार के लिए जाना था। शीत ऋतु थी। वीर के पास दो कुर्त्ते थे। एक धुला हुआ और एक मैला। समय नहीं था कि मैले कपड़े धो लें। ठण्ड से बचने के लिए हुतात्मा ने उजला कुर्ता नीचे पहनकर मैला ऊपर पहन लिया। इस पर लाला मुंशीरामजी वकील ने कहा कि पण्डितजी मैला कुर्ता अन्दर कर लें बाहर ठीक नहीं लगता।

पण्डितजी ने कहा, ''बाबूजी तन के साथ मैला वस्त्र स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। मैं दिखाने मात्र के लिए ऊपर उजला कपड़ा नहीं पहनूँगा। हानि-लाभ भी तो देखना चाहिए।''

महापुरुषों के जीवन का यही सार है। अन्दर मैल नहीं होनी चाहिए। मन शुद्ध होना चाहिए। शुद्ध, उच्च जीवन की यही तो कसौटी है। अन्दर मैल और बाजर उजलापन हो तो छल-कपट है।

-प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

पृष्ठ 3 का शेष

अनुशासन में रहकर निरन्तर अभ्यास करने से व्यक्ति महान बनता है। कहा गया है कि सोए हुए शेर के मुख में शिकार स्वयं नहीं जाता। शिकार करने के लिए शेर को परिश्रम करना पड़ता है। हालांकि शेर शक्तिशाली जानवर है उसे जंगल का राजा कहते हैं लेकिन उसे शिकार करने के लिए दौड़ लगानी पड़ेगी, मेहनत करनी पड़ेगी तभी वह अपनी भूख शान्त कर पाएगा। इसी तरह विद्यार्थी के अन्दर शक्ति है, लेकिन यह बहुत बड़ी बात नहीं है। बड़ी बात है अपनी शक्ति का सही सदुपयोग करना, वरना शक्ति यूं ही समाप्त हो जाती है।

विद्यार्थी कितना भी योग्य हो, बहादुर हो लेकिन अनुशासन न होने से योग्यताएं व्यर्थ हो जाती हैं। अनुशासन विद्यार्थी को उसके स्वरूप का ज्ञान कराता है। उसकी सोई हुई शक्तियों को जागृत करता है और उसके जीवन-यापन में साधक होता है। एक साज है उसको भी सही तरीके से बजाने पर ही संगीत निकलता है। वरना साज होने पर भी संगीत नहीं निकलता। सितार का एक तार ज्यादा कसा हो और एक ढ़ीला हो तो बात नहीं बनती। दोनों तार सही स्थिति में हों तो संगीत निकलता है। इसलिए अपने जीवन में अनुशासन और परिश्रम को अपनाकर सफलता प्राप्त करो।

पृष्ठ 2 का शेष

एनसीईआरटी द्वारा पाठ्यक्रम में किए गए बदलाव की समीक्षा

और इस्लामी सुल्तानों की तथ्यहीन प्रशंसाओं को ही जगह दी गई थी। जिसे एनसीईआरटी द्वारा हटाया गया है। लेकिन एनसीईआरटी का दावा है कि उसने शिक्षा की गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए बदलाव किए हैं और यह बदलाव नए और आधुनिक समय की जरूरत को ध्यान में रखकर किए गए हैं।

इस महत्वपूर्ण विषय पर आर्य समाज का मानना है कि परिवर्तन प्रकृति का अटल नियम है। अगर परिवर्तन सृजन के लिए हो, मानव कल्याण के लिए हो, देश-धर्म, संस्कृति और सभ्यता के उत्थान के लिए हो, अपने गौरवशाली इतिहास की मजबूती के लिए हो, तो उसे सहर्ष स्वीकार करना उचित है। एनसीईआरटी द्वारा पाठ्यक्रम में बदलाव अगर भारत के भविष्य और विश्व की आशा विद्यार्थियों के निर्माण में साधक है तो यह बदलाव अच्छा है।

डीआईओएस डॉ. ओपी राय के अनुसार एनसीईआरटी के तहत पाठ्यक्रमों में जो बदलाव किया गया है वह कक्षा 12 की गणित से संबंध एवं फलन, प्रतिलोम त्रिकोणमितीय फलन, सारणिक, समाकलन, अवकलन, त्रिविमीय ज्यामिति, प्रायिकता, रैखिक प्रोग्रामन अध्याय से कुछ भाग हटा दिए हैं। कक्षा 11 की गणित से समुच्चय, त्रिकोणमितीय फलन, रैखिक असमिकाएं, द्विपद प्रमेय, सरल रेखाएं, शंकु परिच्छेद, गणितीय विवेचन, सांख्यिकी आदि पाठ के कुछ अंश हटाए हैं।

कक्षा 12 में जीव विज्ञान से जीवों का हनन, पर्यावरण के मुद्दे और खाद्य उत्पादन में वृद्धि की कार्यनीति का पूरा अध्याय हटा दिया गया है। इसके अलावा जीवन और समष्टियां, परितंत्र और पर्यावरण के मुद्दे के कुछ अंश हटाए गए हैं। कक्षा 11 से जीव जगत, वनस्पति जगत, जैव अणु के कुछ भाग हटाए हैं। पौधों में परिवहन, खनिज पोषण, पाचन एवं अवशोषण का पूरा अध्याय हटा दिया गया है।

कक्षा 12 के रसायन विज्ञान के पाठ्यक्रम से ठोस अवस्था, पृष्ठ रसायन, तत्वों के निष्कर्षण, पी ब्लॉक के तत्व, बहुलक, दैनिक जीवन में रसायन का पूरा अध्याय हटा दिया गया है। कक्षा 11 से द्रव्य की अवस्थाएं, हाइड्रोजन, एस-ब्लॉक तत्व, पर्यावरण ीय रसायन का पूरा पाठ ही हटाया गया है।

कक्षा 12 में वैद्युत आवेश तथा क्षेत्र, स्थिर वैद्युत विभव तथा धारिता, विद्युत धारा, गतिमान आवेश और चुंबकत्व, चुंबकत्व एवं द्रव्य, प्रत्यावर्ती धारा, वैद्युत चुंबकीय प्रेरण, किरण प्रकाशिकी एवं प्रकाशिक यंत्र, तरंग प्रकाशिकी, परमाणु, नाभिक पाठ से कुछ भाग हटाए हैं। कक्षा 11 से भौतिक जगत अध्याय हटा दिया है। वहीं मात्रक और मापन, सरल रेखा में गति, समतल में गति, गति के नियम, कार्य, ऊर्जा और शक्ति, कणों के निकाय तथा घूर्णी गति, गुरूत्वाकर्षण से कुछ अंश हटा दिए गए हैं।

नेशनल काउंसिल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड ट्रेनिंग (NCERT) ने 12वीं कक्षा के लिए इतिहास, नागरिक शास्त्र और हिंदी के सिलेबस में कुछ बदलाव किए हैं. इतिहास की किताबों से मुगल साम्राज्य से संबंधित पाठों को हटा दिया गया है, जबकि हिंदी की किताब से कुछ कविताएं और पैराग्राफ भी हटाए गए हैं। अपडेटेड सिलेबस के अनुसार, मुगल काल के शासकों और उनके इतिहास पर आधारित अध्यायों को थीम्स ऑफ इंडियन हिस्ट्री पार्ट नामक किताब से हटा दिया गया है. नागरिक शास्त्र की किताब से 'विश्व राजनीति में अमेरिकी वर्चस्व और शीतयुद्ध का दौर जैसे पाठ पूरी तरह से हटा दिए गए हैं। इसके अलावा, स्वतंत्र भारत में राजनीति पर आधारित किताब में 'जन आंदोलनों का उदय' और 'एकदलीय प्रभुत्व के युग' पर आधारित पाठ हटा दिए गए हैं।

एनसीईआरटी के अनुसार, सिलेबस में जो बदलाव हुआ है वह देश भर के उन सभी स्कूलों पर लागू होगा जहां एनसीईआरटी की किताबें पढ़ाई जा रही हैं. सीबीएसई और उत्तर प्रदेश बोर्ड सहित कई अन्य बोर्ड एनसीईआरटी की किताबों को मान्यता देता हैं. ये बदलाव मौजूदा शैक्षणिक सत्र (2023-24) से लागू किए जाएंगे। मुगल काल के अलावा फिराक गोरखपुरी की गजल, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का गीत 'गीत गाने दो मुझे' और विष्णु खरे का सत्य, यूपी बोर्ड और सीबीएसई कक्षा 12 वीं की हिंदी पाठ्यपुस्तकों से हटा दिया गया है।

10वीं और 11वीं की किताबों से भी कई चौप्टर हटा दिए गए हैं, जिनमें 'सेंट्रल इस्लामिक लैंड्स', 'क्लैश ऑफ कल्चर्स' और 'द इंडस्ट्रियल रेवोल्यूशन' 'थीम्स इन वर्ल्ड हिस्ट्री' जैसे चौप्टर शामिल हैं.इसी तरह कक्षा 10वीं की किताब डेमोक्रेटिक पॉलिटिक्स-2 से लोकतंत्र और विविधता, लोकप्रिय संघर्ष और आंदोलन और लोकतंत्र की चुनौतियां जैसे पाठ भी हटा दिए गए हैं। **-संपादक**

पृष्ठ 3 का शेष

आरोग्यता का खजाना– तुलसी का पौधा

में आशा छोड़कर डॉक्टरों ने घोषित किया कि रोगी का यकृत खराब हो रहा है। यक्ष्मा में भी वृद्धि हो रही है। अब यह रोग लाइजाज है। उसी समय एक वैद्य ने उक्त विधान के विरुद्ध चुनौती दी। रोगी को पांच सप्ताह तक केवल तुलसी का सेवन कराया, फलस्वरूप वह इतना स्वस्थ हो गया कि एक मील तक पैदल चल सकता था।

9. हृदय रोग से पीड़ित कई रोगियों के हाई ब्लडप्रेशर तुलसी के उपचार से सामान्य हुए हैं। हृदय की दुर्बलता कम हो गई है और रक्त में चर्बी की वृद्धि रुकी है। जिन्हें ऊंचाई वाले स्थानों पर जाने की मनाही थी, ऐसे अनेक रोगी तुलसी के नियमित सेवन के बाद आनन्दपूर्वक ऊंचाई वाले स्थानों पर जाने में समर्थ हुए हैं।
10. एक लड़का बचपन से ही मन्द बुद्धि का था। सोलह वर्षों तक उसके अनेक उपचार हुए, किंतु उसकी बौद्धिक मन्दता दूर नहीं हुई। तुलसी के नियमित सेवन से दो ही महीनों के भीतर उसमें बुद्धिमत्ता के लक्षण दिखाई पड़े, समय बीतने पर वह कुछ और अधिक बुद्धिशाली हो गया।
11. बच्चों को तुलसीपत्र देने के साथ सूर्य-नमस्कार करवाने और सूर्य को अर्घ्य दिलवाने के प्रयोग से बुद्धि में विलक्षणता आती है।
12. सफेद दाग और कुष्ठ के अनेक रोगियों को तुलसी के उपचार से अद्‌भुत लाभ हुआ है।
13. प्रतिदिन प्रात:काल खाली पेट पानी के साथ तुलसी की पांच सात पत्तियों का सेवन करने से बल, तेज और स्मरण शक्ति बढ़ती है। तुलसी के काढ़े में थोड़ी शक्कर मिलाकर पीने से स्फूर्ति आती है और थकावट दूर हो जाती है। जठराग्नि प्रदीप्त रहती है। इसके रस में नमक मिलाकर उसकी बूंदें नाक में डालने से मूर्च्छा दूर होती है, हिचकियां भी शान्त हो जाती हैं।
14. तुलसी ब्लड-कॉलेस्ट्रोल को बहुत तेजी के साथ सामान्य बना देती है। तुलसी के नित्य सेवन से एसिडिटी दूर होती है। पेचिश, कोलाइटिस आदि मिट जाते हैं।
15. सिर का दर्द, जुकाम, सर्दी, मेदवृद्धि, सिरदर्द आदि में तुलसी गुणकारी है। इसका रस, अदरक रस एवं शहद समभाग में मिश्रित करके बच्चों को चटाने से उनके कुछ रोगों-विशेषकर सर्दी, दस्त, उलटी और कफ में लाभ होता है। हृदयरोग और उसकी अनुषन्निक निर्बलता तथा बीमारी में तुलसी के उपयोग से आश्चर्यजनक सुधार होता है।
16. वजन बढ़ाना या घटाना हो तो तुलसी का सेवन करें, इससे शरीर स्वस्थ और सुडौल बनता है। मन्दाग्नि कब्जियत, गैस आदि रोगों के लिए तुलसी रामबाण औषधि सिद्ध हुई है।
17. तुलसी की क्यारी के पास प्राणायाम करने से सौन्दर्य, पाउडर की तरह चेहरे पर रगड़ने से चेहरे की कान्ति बढ़ती है और चेहरा सुन्दर दिखता है।
18. मुहासों के लिए भी तुलसी अत्यन्त उपयोगी है। तांबे के बरतन में नींबू के रस को चौबीस घंटे तक रख छोड़िए। फिर उसमें इतनी ही मात्रा में काली तुलसी का रस तथा काली कसौंड़ी (कसौंजी) का रस मिलाइए। इस मिश्रण को धूप में सुखाकर गाढ़ा कीजिए। इस लेप को चेहरे पर लगाने से धीरे-धीरे चेहरा स्वच्छ, चमकदार, सुन्दर, तेजस्वी बनेगा तथा कान्ति बढ़ेगी।

-क्रमशः अगले अंक में...

पृष्ठ 5 का शेष

करने के लिए भी उन्हें प्रेरणा प्रदान की जा रही है। परिवारों में सुख, समृद्धि, शांति, प्रेम सौहार्द का वातावरण कैसे बने इस विषय पर आधारित वैदिक संदेश दिया जा रहा है।

महापुरुषों की गौरव गाथाओं का किया जा रहा है यशोगान

देश की युवा पीढ़ी को भारत देश की आजादी के लिए बलिदान देने वाले अमर शहीदों के जीवन चरित्र भजनों और प्रवचनों के माध्यम से सुनाए जा रहे हैं। जिससे युवाओं में देश, धर्म, संस्कृति और भारत के गौरवशाली इतिहास के प्रति आकर्षण जाग रहा है। महापुरुषों की जीवन गाथा सुनकर लोग प्रेरणा प्राप्त कर रहे हैं। चारों तरफ उमंग, उत्साह और उल्लास का वातावरण है। आर्य समाज 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' की ओर आगे बढ़ रहा है।

आप भी सहभागी बनें वेदप्रचार अभियान के

आर्य समाज द्वारा यह वेद प्रचार जन जागरण अभियान लगातार चार महीनों तक चलेगा। आप भी अपने परिवार और इष्टमित्रों सहित अपने क्षेत्र में इस कार्यक्रम में सम्मिलित होवें, अपने क्षेत्र के पार्क, चौक, चौराहे, अथवा सार्वजनिक स्थल पर आयोजन कराने का प्रयास करें, आर्थिक रुप से सहयोग करें, आर्य समाज के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहयोगी बनें।

शोक समाचार

आचार्य श्री विद्यादेव जी का निधन

आर्य समाज के विद्वान, गुरुकुल महाविद्यालय टंकारा के पूर्व आचार्य एवं वेद परायण यज्ञों के ब्रह्मा के रूप में यज्ञीय संस्कृति के प्रचारक आचार्य श्री विद्यादेव जी का 10 अप्रैल 2023 को जिम्स हास्पिटल कासना ग्रेटर नोएडा में अकस्मात निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से गुरुकुल मुर्शद पुर ग्रेटर नोएडा में किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्‌गति एवं शोक-संतप्त व परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -संपादक

सोमवार 10 अप्रैल, 2023 से रविवार 16 अप्रैल, 2023
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि. नं0 डी. एल. (एन. डी.)- 11/6071/2021-22-2023
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 12-13-14 अप्रैल, 2023 (बुध-वीर-शुक्रवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-2023
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 12 अप्रैल, 2023

सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी के जन्मदिन पर शुभकामना यज्ञ संपन्न

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी के जन्मदिन, 3 अप्रैल 2023 को सभा कार्यालय में शुभकामना यज्ञ का कार्यक्रम संपन्न हुआ। जिसमें सभा के उप प्रधान श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी प्रतिनिधि के रूप में यजमान बने और सभा के सभी कार्यकर्ताओं और सदस्यों ने यज्ञ में आहुति देते हुए प्रधान जी के उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घायु के लिए ईश्वर से प्रार्थना की।

प्रतिष्ठा में,

पृष्ठ 1 का शेष

विषयों पर चर्चा की गई दिल्ली सभा से पधारे महामंत्री श्री विनय आर्य जी द्वारा आधुनिक परिवेश में देश की वर्तमान स्थिति और उज्जवल भविष्य के ऊपर विशेष संदेश दिया गया। श्री विनय आर्य जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि वर्तमान में आर्य समाज महर्षि दयानंद सरस्वती की 200वीं जयंती के अवसर पर बृहद कार्यक्रमों की श्रृंखला आयोजित कर रहा है, इस क्रम में यह वैदिक धर्म महोत्सव एक विशेष अवसर है, हमें बिछुडों को गले लगाना है और देश की भव्यता को कायम रखना है, प्राकृतिक खेती गांव आधारित खेती को जन आंदोलन बनाना है और मोटे अनाज को प्रयोग में लाना है, आपने युवाओं को नशा मुक्त करने का संदेश दिया, क्योंकि युवा ही देश की रीड की हड्डी हैं, रिश्ते बचाने को लेकर श्री विनय आर्य जी ने कहा कि आजकल हमारे देश में एक विशेष षड्यंत्र चल रहा है, जिसका हिंदू वर्ग बड़े स्तर पर शिकार हो रहे हैं, नो चाइल्ड पॉलिसी का प्रचार-प्रसार कुछ सामाजिक संगठनों द्वारा किया जा रहा है हमें सावधान होना चाहिए और कम से कम 2 बच्चे अवश्य पैदा करना चाहिए जिससे हम अपने धर्म संस्कृति और देश की रक्षा कर सकें। महर्षि दयानंद सरस्वती की 200वीं जयंती पर उनकी शिक्षाओं को जन जन तक पहुंचाने के लिए युवा वर्ग आगे आए और कम से कम 10 लोगों को आर्य विचारधारा से जोड़े, इससे आने वाला समय आर्य समाज का होगा। इस अवसर पर रंजीत आर्य प्रधान, उपेंद्र गुप्ता कोषाध्यक्ष, मुन्ना आर्य, शिव शंकर प्रसाद आर्य, राकेश आर्य, चंद्रमणि आर्य, दीपक कुमार, रोहित कुमार, प्रशांत कुमार, अर्जुन आर्य, भोला साल आदि प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

-रंजीत आर्य प्रधान

ओ३म्
आर्य समाज का प्रकल्प

आर्य प्रतिभा विकास संस्थान के छात्र
विशाल गुप्ता
द्वारा यूपीपीएससी में पीएससी परीक्षा 2022 में 49 वीं रैंक हासिल करने के लिए
हार्दिक बधाईयाँ
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए
उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश

	मुद्रित मूल्य	प्रचारार्थ
प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23x36%16	₹60	₹40
विशेष संस्करण (सजिल्द) 23x36%16	₹100	₹60
पॉकेट संस्करण	₹80	₹50
विशिष्ट पॉकेट संस्करण	₹150	₹100
स्थूलाक्षर (सजिल्द) 20x30%8	₹150	₹100
उपहार संस्करण	₹1100	₹750
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी अजिल्द	₹200	₹130
सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी सजिल्द	₹250	₹170

प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं

कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

JBM Group
Our milestones are touchstones

TECHNOLOGY DRIVING VALUE TOWARDS CREATING A CLEANER | GREENER | SAFER TOMORROW.
JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व संपादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्पेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, फोनः 23360150, 23365959, E-mail : aryasabha@yahoo.com, Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
● सम्पादकः धर्मपाल आर्य ● सह सम्पादकः विनय आर्य ● व्यवस्थापकः शिवकुमार मदान ● सह व्यवस्थापकः आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह